P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बस्तर जिले के माड़िया जनजाति के जीवन संस्कारों का अध्ययन

Study of Life Rituals of Madiya Tribe of Bastar District

Paper Submission: 05/01/2020, Date of Acceptance: 15/01/2020, Date of Publication: 20/01/2020

सुकृता तिर्की
सहायक प्राध्यापक
मानव विज्ञान एवं
जनजातीय अध्ययनशाला
विभाग
बस्तर विश्वविद्यालय,
बस्तर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

सांस्कृतिक विविधता भारत की एक अमूल्य निधि है। यहाँ अनेक धर्म व जाति के लोग रहते हैं जिनका एक समृद्धि इतिहास है माड़िया जनजाति का अपना एक पृथक सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान है। किसी समुदाय की सामाजिक पहचान में उससे जुड़ी संस्कृति से पूर्वतः परिचित होने हेतु जीवन संस्कार के विविध पहलुओं की विस्तृत जानकारी मानवषास्त्रीय दृष्टिकोण से नितांत जरूरी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन बस्तर जिले के माड़िया जनजाति के जीवन संस्कारों का अध्ययन विषय में जुड़े समस्त बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

Cultural diversity is an invaluable treasure of India. People of many religions and castes live here who have a rich history. Madiya tribe has its own separate socio-cultural identity. In order to be familiar with the culture associated with the social identity of a community, detailed knowledge of various aspects of life rituals is absolutely necessary from anthropological point of view. In the presented research study, detailed discussion has been given on all the points related to the study of life rituals of Madiya tribe of Bastar district.

मुख्य शब्द : माड़िया, संस्कृति, कूटन।

Keyword: Madiya, Culture, Code.

प्रस्तावना

माड़िया जनजाति दक्षिण-बस्तर के सभी जिले नारायणपुर, कांकेर, कोण्डागाँव, सुकमा दतेवाड़ा, बस्तर एवं बीजापुर में निवासरत हैं। माड़िया जनजाति गोंड की उप-जाति मानी जाती हैं। माड़िया जनजाति गोंडी बोली का प्रयोग करते हैं। यह द्रविड़ भाषा परिवार के अन्तर्गत षामिल है। माड़िया जनजाति कृषि-पषुपालन, वन-आधारित उत्पादों का संकलन करती हैं। माड़िया जनजाति पेन (देव) की पूजा करते हैं। इनके प्रमुख त्यौहार पेन पण्डुम, आमुस, मरका पण्डुम, इरपी पण्डुम, बीजा पण्डुम, बोहरानी इत्यादि हैं। माड़िया जनजाति गाँवों में एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले तक पहुँचने का साधन पगदंडी या कच्चे मार्ग होते हैं। ग्राम के किनारे ग्राम देवी या देवता का गुड़ी (मंदिर) होता है। 'गुड़ी' के अन्दर लकड़ी, पत्थर एवं लोहे को प्रतीक के रूप में रखते हैं माड़िया जनजाति का आवास कच्चा होता है। जिसमें दो से तीन कमरे होते हैं। आवास का निर्माण मिट्टी, लकड़ी, बाँस घास-फूस, खपरैल से करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र बस्तर जिले के सांस्कृतिक जीवन पर आधारित है। इस शोध पत्र का बस्तर जिले के माड़िया जनजाति के जीवन के समस्त पहलुओं का विवरण प्रस्तुत करना है।

क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु बस्तर जिले के ग्राम लोहण्डीगुड़ा, रान सरगीपाल, मारडुम, करका, बुर्गुम में निवासरत बुजुर्ग व्यक्तियों, सिरहा, पुजारी, समाज प्रमुख, पटेल इत्यादि से एकल व सामूहिक साक्षात्कार, अवलोकन, अर्द्ध-सहभागी अवलोकन के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों

का संकलन किया गया है। द्वितीयक तथ्यों का संकलन पूर्व संदर्भ ग्रंथो, प्रतिवेदनों, जनगणना प्रतिवेदनों से संकलन किया गया है।

जीवन संस्कारः

जन्म संस्कारः- माड़िया जनजाति में गर्भवती स्त्री का प्रसव गाँव की दाई एवं घर की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा कराया जाता है। प्रसव के बाद जैसे ही नवजात बच्चे का जन्म होता है दाई हाथ में रखकर शिशु को रूलाती है। शिशु के नही रोने पर गर्म पानी से पीट में छिड़कते और हाथ से धीरे-धीरे मारते हैं। शिशु के रोने से नाल को हंसीया, तीर, धागे से या छुरी से काट कर धागे से बाँध दिया जाता है। बच्चे को हल्दी पानी से पोछते है और सूखा कपडे मे लपटते है और नाल को घर में गड्ढा खोद कर गाड़ दिया जाता है एवं उस स्थान को ऊपर से लिप कर आग जला दिया जाता है और नाल के झडने तक उसी स्थान पर प्रसूता एंव शिशु को रखा जाता है। नाल झडने के बाद षुद्धिकरण किया जाता है। इसमें लगभग 21 प्रकार की जडी-बुटी से कस्सा पानी तैयार किया जाता है एवं अपने पीत्तर देवी-देवता को अर्पित या तरपनी देने के बाद माता को पिलाया जाता है और कस्सा पानी रस्म में आये आस-पास की घर की महिलाओं को पीने के लिये दिया जाता है। इसके एक दो हफ्ते बाद छटी या नामकरण रस्म किया जाता है। छट्टी रस्म के लिये घर की लिपाई-पोताई, कपडो की धुलाई एंव कस्सा पानी बना कर घर के चारो तरफ छिडकाव किया जाता है एवं उसके बाद छट्टी का कार्यक्रम किया जाता है। छटी के लिये मामा बुआ, सगा संबंधियों एंव गांव के लोगो को सूचना दिया जाता है। छटी के दिन शिशु का नामकरण संस्कार होता है। समस्त रस्मों की समाप्ति के बाद सभी आये हुए सगे संबंधियों एवं गाँव के लोगो को भोज कराया जाता है।

विवाह संस्कारः- माड़िया जनजाति में विवाह जीवन का प्रमुख संस्कार है। माड़िया जनजाति में ममेरे-फूफेरे विवाह को अधिमान्यता प्राप्त है। माड़िया जनजाति के विवाह, जाति अंतर्विवाही व गोत्र बर्हिविवाही होते हैं। माड़िया जनजाति समूह में सहमति विवाह में बेटी पहुचाना विवाह का प्रचलन अधिक है इस विवाह में विवाह प्रस्ताव से विवाह तक अनेक बार महाला रस्म होता है।

इसके अतिरिक्त अन्य विवाहों का भी प्रचलन है। जैसे ठेंगा विवाह इसमें वर को उसके घर में तेल हल्दी चढाते है और बाजा मोहरी के साथ बारात जाते है। वधु को उसके घर में तेल हल्दी चढाते है और दोनो को मिलाकर वधु के घर में लग्न कराते हैं। तत्पष्चात् वधु के वर के घर लाने के बाद मान्डों में एक चक्कर लगा कर तेल उतारते है। विवाह के विभिन्न रस्मो के साथ विवाह सम्पन्न होता है । चल-विवाह, धरमार-विवाह, मन्द-विवाह, घर-जमाई विवाह, चुड़ी पहनाना विवाह व ठेगवा विवाह भी प्रचलित है।

मृत्यु संस्कारः- माड़िया जनजाति में किसी परिवार मे दुख या मृत्यु होने पर शव के पास दिया जलाते है उस मृत शरीर को आम के पत्ते से चोवर करते रहते है जब तक कि उसे मरघट अर्थात श्मशान नही ले जाते है। सभी सगा संबंधी, रिष्तेदार, नातेदारी व गाँव के लोगो को मृत्यु की सूचना दी जाती हैं, घर में सभी एकत्रित हुए गांव व रिश्तेदारों के द्वारा बांस से निर्मित डोला या टरन्डी सियाडी रस्सी से बान्धकर बनाया जाता है। उसके ऊपर केले का पत्ता व नया कपड़ा रखकर शव को रखा जाता हैं इसके बाद सियाडी रस्सी व कफन कपडा को लंबा फाड़ कर उस शव को टरन्डी के साथ बाध्ंा देते है। घर का बडा पुत्र एवं अन्य रिष्तेदार लोग उस मृत शरीर को कन्धा दे कर श्मशान ले जाते है और आये हुये सभी लोग भी शव के साथ जाते है उनके पीछे महिलायें रोते हुये व घर की सबसे बडी बहू बांस

से बने टोकना में चाँवल, पैसा व लाई छिड़कते श्मशान की ओर जाती है। श्मशान पहुचने के पूर्व कन्धे में रखे शव को नीचे ऊतार कर रख दिया जाता है। पुरूष वर्ग टरन्डी को मरघट या श्मशान की ओर ले जाते है। उस स्थान में जहाँ पर शव को दफनाना अथवा गाड़ना होता है। गड्ढा करने के पूर्व एक-दो रूपये जमीन माता के नाम पर डाल देते है। गड्ढा खोदने के बाद एक तरफ गोबर से लिपाई करते है तब टरन्डी के साथ शव को तीन से पाँच बार गड्ढे के ऊपर घुमाते है । उसके बाद नीचे गढ्ढे में केला का पत्ता व नया कपडा बिछा कर पाँच से सात लोग मिलकर शव को गड्ढे में डालते है और कुछ रस्म के बाद मृत शरीर के ऊपर नमक डाला जाता है। उसके बाद सबसे बड़ा बेटा और घर के लोग बाएँ हाथ से सर्वप्रथम मिट्टी देने के बाद सभी लोग एक एक करके मिट्टी डालते है उसी समय मृत शव के सिर की तरफ से शव को छुते हुये दाब खड़ को सीधा गड्ढे से ऊपर निकाला जाता है और मिट्टी आधा डालने के बाद दो से तीन हान्डी पानी डाल कर पैर से अच्छे से दबाया जाता है और रापा की मदद से मिट्टी को गड्ढे में डाल कर शव को दफना दिया जाता है और फिर कुछ लोगों के द्वारा मिट्टी से लिपाई किया जाता है।

सामाजिक नियम के अनुसार छोटे पुत्र को माता का दहा संस्कार व बडा पुत्र को पिता के दहा संस्कार का अधिकार होता है ।

दिन नहानी या क्रियाक्रम- 13 दिन या उस से अधिक दिन का निष्चित दिन क्रियाकर्म या दिन नहानी कार्यक्रम होता है। इस दिन परिवार के सदस्य व संबंधियों का मुडन होता है। सभी लोग नहा कर हान्डी के पास आते है पुजारी द्वारा हान्डी माट्टी पित्तर देव के नाम से चांवल का पूँजी या ढेर लगा कर रखते है वह इन चांवल को देख कर लोग अनुमान लगाते है कि उनकी मृत्यु कैसे हुई। फिर पुजारी बना हुआ भोजन को पुजा के बाद महिला पुरूष मिल कर अरवनी या मृत्यु आत्मा को आधे रास्ते पर भोजन छोड कर आते है उसके बाद उनके नाम से समाज के सभी लोगो को भोज कराते हैं।

भोजन के बाद दान का कार्यक्रम या बाधंन काटने व हाट कार्यक्रम रस्म होता है। हाट रस्म के कार्यक्रम के बाद क्रियाकर्म रस्म समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष

प्रत्येक आदिवासी समुदाय का अपना एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान होता है। छ.ग. के बस्तर जिले में निवास करने वाली माड़िया जनजाति की भी अपनी एक अलग पहचान है। आधुनिकता के इस दौर में सभी नवीन ज्ञान व जानकारियों को अल्प मात्रा में आत्मसात करते जा रहे हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद माड़िया जनजाति अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता को बनाएँ हुए हैं। माड़िया जनजाति के जीवन संस्कार के विविध पक्ष मानव वैज्ञानिक दृष्टिकोण से रूचि का विषय है। इस अध्ययन में माड़िया जनजाति के जीवन संस्कार से जुड़े विविध पहलूओं का सूक्ष्मता से जानने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय शंकर विजय डॉ. और षर्मा प्रकाष विजय डॉ. (1993). भारत की जनजातीय संस्कृति, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
2. तिवारी कुमार विजय डॉ (2001) छत्तीसगढ की जनजातियॉ, हिमालया पब्लिषिंग हाउस गिरगॉव मुम्बई ।
3. निरगुणे वसन्त (2004) आदिवर्त छत्तीसगढ की जनजातियॉ, महावीर पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इन्दौर।
4. वैष्णव के.टी. डॉ (2004) छत्तीसगढ की अनुसूचित जनजातियॉ, आदि जाति अनुसंधान एंव प्रषिक्षण संस्थान, रायपुर, दिल्ली ।

5. गुप्ता. एल. एम और शर्म. डी. डी डॉ (1999) सामाजिक मानवषास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेषन्स, आगरा।
6. बेहार रामकुमार डॉ (1995) बस्तर एक अध्ययन,मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल ।
7. वेरियर एलविन (2008) मुरिया और उनका घोटुल, राजकमल प्रकाषन प्रा. लि नई दिल्ली ।
8. ठाकुर केदारनाथ पं (1908) बस्तर भूषण ।
9. हसनैन नदीम (2005), जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिषर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूठर्स नई दिल्ली ।
10. अबूझमाड़िया विशेष पिछड़ी जनजाति सिंह, आर, गुहा, एम. बुलेटिन ऑफ द ट्रायबल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट भोपाल, जनवरी 03-जून 04, संयुक्तांक - 41.
11. नुरूटी, डॉ. किरण, 2012, बस्तर के गोंड जनजाति की धार्मिक अवधारणा। गोंड़वाना- गोंडी साहित्य परिषद, नागपुर। देव आफसेट प्रिंटर्स।